जनता के सवाल, राजनीति के बहाने और व्यवस्था की खामोशी

प्रतिनिधि/प्रतिदिन अखबार

अमरावती, 14 जून - अमरावती की राजनीति और प्रशासनिक हलचल इन दिनों कई ऐसे सवाल खड़े कर रही है, जिनका जवाब जनता जानना चाहती है. एक ओर भाजपा नेता किरीट सोमैया एक बार फिर अमरावती की धरती पर सक्रिय हैं और वर्षों पुराने जन्म प्रमाणपत्रों के मुद्दे को लेकर तहसीलों के चक्कर लगा रहे हैं, तो दूसरी ओर स्थानीय स्तर पर इस विषय को लेकर कोई नया तथ्य सामने नहीं आया है. पूर्व में जिला प्रशासन द्वारा गठित विशेष जांच दल को भी जिले में एक भी बांग्लादेशी अथवा रोहिंग्या घुसपैठिया नहीं मिला था. ऐसे में सवाल यह है कि क्या यह मुद्दा वास्तव में सुरक्षा का है या फिर राजनीतिक प्रासंगिकता बनाए रखने का एक सतत प्रयास? उधर स्थानीय निकाय विधान परिषद चुनाव के

किरीट सोमैया के आने से लेकर बिजली जाने

बीच कांग्रेस की स्थिति भी चर्चा का विषय बनी हुई है. कांग्रेस उम्मीदवार हर्षजीत देशमुख के अस्पताल में भर्ती होने से चुनावी समीकरणों के साथ-साथ पार्टी की सक्रियता पर भी प्रश्नचिह्न लग गया है. पूर्व मंत्री यशोमति ठाकुर ने करोड़ों के कथित राजनीतिक सौदों का आरोप लगाकर इस मामले को और अधिक विवादास्पद बना दिया है. चुनावी मैदान से उम्मीदवार का अचानक अस्पताल पहुंचना और उसके बाद उठे राजनीतिक आरोप कांग्रेस संगठन की आंतरिक स्थिति पर भी अनेक सवाल खड़े कर रहे हैं. इसी बीच विधान परिषद चुनाव की आचार संहिता के दौरान विभिन्न स्तरों पर नियमों के उल्लंघन की शिकायतें भी सामने आ रही हैं. लोकतांत्रिक प्रक्रिया की शुचिता बनाए रखने की जिम्मेदारी जिन पर है, वही यदि नियमों को हल्के में लेते दिखाई दें, तो चिंता स्वाभाविक है. और इन सबके बीच आम नागरिक फिर उसी पुराने संकट से जूझ रहा है. मानसून दस्तक दे चुका है, लेकिन महावितरण की तैयारियां अब भी अधूरी नजर आती हैं. हल्की हवा चलने पर बिजली गुल होना और घंटों आपूर्ति बाधित रहना यह बताता है कि व्यवस्था ने पिछले वर्षों से कोई सबक नहीं लिया है. आज के खबरों की खबर में इन्हीं मुद्दों की परतें खोलने का प्रयास करेंगे, क्योंकि खबरों के पीछे छिपी असली खबर ही अक्सर सबसे महत्वपूर्ण होती है.

प्रतिदिन अखबार
खबरों की खबर
बीते सात दिन की
डेस्क

सबूत नहीं, सिर्फ शोर! आखिर कब तक चलता रहेगा सोमैया मॉडल?

अमरावती में एक बार फिर वही पुराना राजनीतिक अध्याय दोहराया जा रहा है. भाजपा नेता किरीट सोमैया समय-समय पर जिले में पहुंचते हैं, तहसील कार्यालयों से जारी जन्म प्रमाणपत्रों पर सवाल उठाते हैं और अवैध बांग्लादेशी तथा रोहिंग्या घुसपैठियों की मौजूदगी का दावा करते हैं. लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि इन दावों का आधार क्या है? विगत वर्षों में इसी मुद्दे को लेकर इतना शोर मचाया गया कि तत्कालीन जिलाधिकारी को विशेष जांच दल (एसआईटी) गठित करना पड़ा. जांच हुई, दस्तावेज खंगाले गए, सत्यापन किया गया, लेकिन परिणाम शून्य रहा. एसआईटी को जिले में एक भी अवैध बांग्लादेशी या रोहिंग्या नहीं मिला. इसके बावजूद आरोपों का सिलसिला थमा नहीं. इससे यह प्रश्न और गहरा हो जाता है कि आखिर इस अभियान का उद्देश्य वास्तविक समस्या का समाधान है या फिर राजनीतिक विमर्श को लगातार गर्म बनाए रखना? और भी दिलचस्प बात यह है कि किरीट सोमैया वर्तमान में किसी संवैधानिक अथवा प्रशासनिक पद पर नहीं हैं. इसके बावजूद वे अमरावती आते हैं, प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बैठकें करते हैं, प्रेस कॉन्फ्रेंस में गंभीर आरोप लगाते हैं और फिर अगले जिले की ओर बढ़ जाते हैं. अमरावती, अकोला, नागपुर और मालेगांव जैसे शहरों में लगभग एक जैसा पैटर्न दिखाई देता है. लोकतंत्र में सवाल उठाने का अधिकार सभी को है, लेकिन सवालों के साथ जवाबदेही भी जुड़ी होती है. यदि बार-बार लगाए जा रहे आरोपों को जांच एजेंसियां प्रमाणित नहीं कर पा रही हैं, तो फिर ऐसे आरोपों के सामाजिक और प्रशासनिक प्रभावों पर भी चर्चा होनी चाहिए. निराधार आशंकाएं समाज में अविश्वास का वातावरण पैदा करती हैं और प्रशासन की ऊर्जा वास्तविक समस्याओं से भटका देती हैं. सबसे बड़ा प्रश्न प्रशासन की भूमिका को लेकर भी है. यदि आरोप गलत हैं तो स्पष्ट जवाब क्यों नहीं दिया जाता, और यदि आरोप सही हैं तो ठोस कार्रवाई क्यों नहीं होती? अमरावती की जनता को शोर नहीं, बल्कि तथ्य चाहिए. राजनीति के लिए मुद्दे गढ़ना आसान है, लेकिन समाज में विश्वास बनाए रखना कहीं अधिक कठिन.

उम्मीदवार अस्पताल में, कांग्रेस वेंटिलेटर पर!

स्थानीय निकाय निर्वाचन क्षेत्र के विधान परिषद चुनाव ने कांग्रेस की राजनीतिक सेहत पर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं. चुनाव प्रचार अपने चरम पर है, कार्यकर्ता मैदान में हैं, मतदाताओं से संपर्क का दौर जारी है, लेकिन इसी बीच कांग्रेस के अधिकृत उम्मीदवार हर्षजीत देशमुख का अचानक चुनावी गतिविधियों से दूर होकर निजी अस्पताल के आईसीयू में भर्ती हो जाना चर्चा और अटकलों का विषय बन गया है. देशमुख का कहना है कि स्वास्थ्य संबंधी कारणों से उन्हें एंजियोग्राफी के लिए भर्ती होना पड़ा. बीमारी किसी के भी जीवन में अचानक आ सकती है और उस पर राजनीति करना उचित नहीं माना जा सकता. लेकिन जब मामला चुनाव के बीच का हो और उम्मीदवार अचानक प्रचार से पूरी तरह गायब हो जाए, तब राजनीतिक सवाल उठना भी स्वाभाविक है. स्थिति तब और अधिक गंभीर हो गई, जब कांग्रेस की वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मंत्री यशोमति ठाकुर ने इस पूरे घटनाक्रम के पीछे करोड़ों रुपये के कथित सौदे का आरोप लगा दिया. यदि यह आरोप केवल राजनीतिक प्रतिक्रिया है, तो यह भी चिंताजनक है, और यदि इसमें सच्चाई का अंश है, तो उससे भी अधिक गंभीर स्थिति पैदा होती है. दोनों ही परिस्थितियों में नुकसान कांग्रेस की राजनीतिक विश्वसनीयता का ही होता है. दरअसल, चुनाव केवल उम्मीदवार का नहीं, बल्कि पूरे संगठन की क्षमता और प्रतिबद्धता की परीक्षा होता है. जब पार्टी का उम्मीदवार ही मैदान से बाहर दिखाई दे, तो कार्यकर्ताओं का मनोबल प्रभावित होना स्वाभाविक है. विरोधियों को भी हमला करने का अवसर मिल जाता है. दिलचस्प यह है कि कांग्रेस के लिए यह कोई नया अनुभव नहीं है. पिछले चुनाव में भी अनिल माधोगढ़िया के मामले को लेकर इसी तरह की चर्चाएं हुई थीं और अंततः पार्टी को करारी हार का सामना करना पड़ा था. इतिहास से सबक लेने के बजाय यदि वही गलतियां दोहराई जाएं, तो परिणाम भी अलग नहीं होते. आज सवाल केवल हर्षजीत देशमुख के अस्पताल में भर्ती होने का नहीं है. असली सवाल यह है कि क्या कांग्रेस संगठन चुनावी लड़ाई लड़ने की मानसिक और राजनीतिक स्थिति में है? फिलहाल तस्वीर यही संकेत दे रही है कि आईसीयू में केवल उम्मीदवार नहीं, बल्कि कांग्रेस की चुनावी रणनीति और संगठनात्मक तैयारी भी दिखाई दे रही है.

आचार संहिता या दोहरा मापदंड?

अमरावती में स्थानीय निकाय निर्वाचन क्षेत्र के विधान परिषद चुनाव को लेकर आचार संहिता लागू है. चुनावी प्रक्रिया की निष्पक्षता बनाए रखने और सरकारी संसाधनों के दुरुपयोग को रोकने के लिए यह व्यवस्था लागू की जाती है. लेकिन जब नियमों के अनुपालन में समानता दिखाई नहीं देती, तब सवाल उठना स्वाभाविक हो जाता है. आचार संहिता लागू होते ही विकास कार्यों पर रोक लग जाती है. नई योजनाओं की घोषणाएं थम जाती हैं, छोटे-छोटे प्रशासनिक निर्णय भी टाल दिए जाते हैं और आम नागरिकों के अनेक काम लंबित पड़ जाते हैं. प्रशासन का तर्क होता है कि चुनावी निष्पक्षता सर्वोपरि है. लेकिन इसी दौरान यदि कोई बड़ा राजनीतिक नेता शहर में आता है, मनपा कार्यालय में बैठकों का दौर चलता है, वरिष्ठ अधिकारी और जनप्रतिनिधि उसमें शामिल होते हैं तथा पूरे कार्यक्रम को प्रशासनिक और पुलिस संरक्षण भी प्राप्त होता है, तो स्वाभाविक रूप से लोगों के मन में सवाल पैदा होते हैं. हाल ही में किरीट सोमैया की अमरावती यात्रा को लेकर यही चर्चा शुरू हुई है. आम नागरिक यह जानना चाहता है कि यदि आचार संहिता के कारण विकास कार्य रोके जा सकते हैं, तो फिर ऐसी बैठकों को अनुमति किस आधार पर दी गई? यदि बैठक केवल प्रशासनिक थी, तो उसकी आवश्यकता और औचित्य सार्वजनिक रूप से स्पष्ट किया जाना चाहिए. और यदि उसमें राजनीतिक स्वरूप था, तो फिर आचार संहिता के नियमों का पालन किस प्रकार सुनिश्चित किया गया? लोकतंत्र में नियमों की सबसे बड़ी ताकत उनकी समानता होती है. यदि नियम केवल जनता और निचले स्तर के प्रशासन पर लागू हों, जबकि प्रभावशाली नेताओं के लिए अलग व्यवस्था दिखाई दे, तो व्यवस्था की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगना स्वाभाविक है. आचार संहिता का उद्देश्य विकास रोकना नहीं, बल्कि चुनावी प्रक्रिया को निष्पक्ष बनाना है. इसलिए जरूरी है कि प्रशासन हर कार्रवाई में पारदर्शिता बनाए रखे और यह स्पष्ट करे कि कानून और नियम सभी के लिए समान हैं. क्योंकि लोकतंत्र में सवाल केवल नियमों के होने का नहीं, बल्कि उनके निष्पक्ष पालन का होता है.

जनता के लिए बंदिशें, नेताओं के लिए छूट क्यों?

बिल में फुर्ती, बिजली में सुस्ती!

मानसून की पहली दस्तक के साथ ही अमरावती में एक बार फिर महावितरण की पोल खुलने लगी है. हल्की हवा चले, पेड़ की एक डाल हिले या बादल थोड़ा गरज जाएं, शहर और ग्रामीण क्षेत्रों की बिजली ऐसे गायब हो जाती है मानो व्यवस्था किसी आपदा से जूझ रही हो. विडंबना यह है कि यह कोई नई समस्या नहीं है। हर वर्ष यही हाल रहता है, लेकिन महावितरण के अधिकारियों के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती. पालकमंत्री चंद्रशेखर बावनकुले बार-बार समीक्षा बैठकें लेते हैं, निर्देश जारी करते हैं और व्यवस्था सुधारने की बात करते हैं. लेकिन जमीनी स्तर पर तस्वीर बिल्कुल उलट दिखाई देती है. महावितरण का पूरा तंत्र मानो केवल बिल वसूली तक सीमित होकर रह गया है. उपभोक्ता का बिल एक दिन भी बकाया हो जाए तो नोटिस, फोन और बिजली काटने की कार्रवाई तत्काल शुरू हो जाती है. लेकिन जब उपभोक्ता घंटों या कई बार पूरे दिन बिजली गुल रहने की शिकायत करता है, तब जिम्मेदार अधिकारी फोन उठाना भी जरूरी नहीं समझते. सबसे चिंताजनक बात यह है कि समस्या अब तकनीकी नहीं, बल्कि मानसिकता की बन चुकी है. पुराने तार, जर्जर ट्रांसफार्मर और बार-बार होने वाले फॉल्ट वर्षों से लोगों की परेशानी का कारण बने हुए हैं. जनता लगातार मांग कर रही है कि ट्रांसफार्मर बदले जाएं, बिजली लाइनों का आधुनिकीकरण किया जाए और बरसात से पहले आवश्यक रखरखाव किया जाए. लेकिन ऐसा लगता है कि महावितरण को केवल राजस्व चाहिए, सेवा नहीं. आज हालात यह हैं कि लोग गुस्से में कार्यालयों के चक्कर काट रहे हैं, सोशल मीडिया पर नाराजगी व्यक्त कर रहे हैं और कई स्थानों पर आक्रोश खुलकर सामने आ रहा है. आखिर जनता भी कब तक बिजली के नाम पर यह यातना सहे? महावितरण को यह समझना होगा कि बिजली कोई उपकार नहीं, बल्कि उपभोक्ताओं का अधिकार है. यदि बिल समय पर चाहिए, तो सेवा भी समय पर देनी होगी. अन्यथा महावितरण का नाम लोगों के बीच महाविपत्तिकरण के रूप में ही याद किया जाएगा.

महावितरण बना जनता की सबसे बड़ी मुसीबत

तंबाकू की पुड़िया को लेकर मजाक बना विवाद

दो सगे भाइयों पर हमला, काठी और फावड़े के डंडे से मारपीट

लोणी थाना के टाकळी बुजुर्ग गांव की घटना

संवाददाता/प्रतिदिन अखबार

लोणी, 14 जून - लोणी थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम टाकळी बुजुर्ग में मामूली मजाक के बाद विवाद इतना बढ़ गया कि दो सगे भाइयों पर हमला कर उन्हें घायल कर दिया गया. चीनी उपचार के लिए बाद में अमरावती जिला अस्पताल रेफर किया गया. पुलिस ने मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है.

जानकारी के अनुसार शिकायतकर्ता ज्योति नारायण बाजड (40, टाकळी बुजुर्ग) ने थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई. शिकायत के अनुसार घटना शनिवार, 13 जून की रात करीब 9 बजे की है. बताया गया कि शिकायतकर्ता के रिश्तेदार से आरोपियों ने तंबाकू की पुड़िया मांगते हुए मजाक किया. जब रिश्तेदार ने मजाक न करने की बात कही तो विवाद बढ़ गया. आरोप है कि इसके बाद दोनों आरोपियों ने मिलकर शिकायतकर्ता के रिश्तेदार पर हमला कर दिया और लकड़ी की काठी से सिर पर वार कर उसे घायल कर दिया. इसके बाद शिकायतकर्ता के पति घायल व्यक्ति को घर ले जा रहे थे. तभी आरोपियों ने रास्ता रोक लिया और जान से मारने की धमकी दी. शिकायत में यह भी कहा गया कि आरोपियों ने गाली-गलौज की और उनमें से एक ने शिकायतकर्ता के पति पर फावड़े के लकड़ी के डंडे से सिर और पैर पर हमला कर घायल कर दिया. घटना के बाद घायलों का कर के लिए अस्पताल में दाखिल कराया गया और मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर मामला दर्ज किया गया. पुलिस ने मामले में आरोपी मंगेश ज्ञानेश्वर गडलिंग और महेश ज्ञानेश्वर गडलिंग दोनों निवासी टाकळी बुजुर्ग को तड़के गिरफ्तार कर लिया. पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है.

कत्ल के लिए ले जाए जा रहे 13 गौवंश जब्त

3.35 लाख रुपये का माल बरामद | नागरवाड़ी खेत परिसर में छापा | ब्राम्हणवाडा थडी पुलिस की कार्रवाई

संवाददाता/प्रतिदिन अखबार

ब्राम्हणवाडा थडी, 14 जून - ग्रामीण पुलिस ने अवैध गतिविधियों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत एक कार्रवाई करते हुए कत्तल एवं अवैध बिक्री के उद्देश्य से पैदल ले जाए जा रहे 13 गौवंशीय पशुओं को जब्त किया है. जब्त किए गए पशुओं की कुल अनुमानित कीमत 3 लाख 35 हजार रुपये बताई गई है.

जानकारी के अनुसार पुलिस अधीक्षक निकेतन कदम के निदेर्शानुसार जिले के सभी थाना प्रभारियों को अवैध जुआ, शराब बिक्री, हाथभट्टी, अवैध रेत परिवहन, गौवंश तस्करी तथा गुटखा बिक्री के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने के आदेश दिए गए थे. इसी तरह शनिवार,13 जून की सुबह लगभग 9 बजे ब्राम्हणवाडा थडी पुलिस स्टेशन के अधिकारी एवं पुलिस कर्मियों की टीम अवैध धंधों पर कार्रवाई हेतु क्षेत्र में गश्त कर रही थी. इसी दौरान गुप्त सूचना मिली कि नागरवाड़ी खेत परिसर के पांदण मार्ग पर कुछ लोग गौवंशीय पशुओं को पैदल ले जा रहे हैं. सूचना के आधार पर पुलिस ने मौके पर छापेमारी की. कार्रवाई के दौरान विभिन्न रंग एवं उम्र के कुल 13 बैल एवं बछड़े बरामद किए गए. पुलिस के अनुसार इन पशुओं को चोरी कर लाया गया था तथा इन्हें कत्ल एवं बिक्री के उद्देश्य से ले जाया जा रहा था. पुलिस ने सभी पशुओं को सुरक्षित कब्जे में लेकर उनकी कुल कीमत 3 लाख 35 हजार रुपये बताई है. इस मामले में आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है. यह कार्रवाई पुलिस अधीक्षक निकेतन कदम के आदेशानुसार की गई. कार्रवाई का मार्गदर्शन अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दत्ता तोटेवाड तथा उपविभागीय पुलिस अधिकारी अंजनगांव सुर्जी के मनीष ठाकरे ने किया. कार्रवाई को सफलतापूर्वक अंजाम देने में सहायक पुलिस निरीक्षक एवं थाना प्रभारी ब्राम्हणवाडा थडी प्रशांत जाधव, राजू मरसकोल्हे, अजय नंद, अंकुश दाभाडे तथा विशाल सिंगल का विशेष योगदान रहा.

पुराने मोबाइल के विवाद में युवक पर पत्थर से हमला

सिम कार्ड वापस मांगने पर विवाद बढ़ा

परतवाड़ा के कविठा स्टॉप क्षेत्र की घटना

संवाददाता/ प्रतिदिन अखबार

परतवाड़ा - परतवाड़ा थाना क्षेत्र में पुराने मोबाइल के लेन-देन को लेकर हुए विवाद में एक युवक पर पत्थर से हमला किए जाने का मामला सामने आया है. घटना में युवक घायल हो गया. जिसके बाद पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है.

जानकारी के अनुसार शिकायतकर्ता हेमत विजयसिंह ठाकुर (31, देशमुख प्लॉट, पेंशनपुरा, परतवाड़ा) ने थाने में शिकायत दर्ज कराई है. शिकायत में बताया गया कि शिकायतकर्ता ने आरोपी से पुराना इस्तेमाल किया हुआ मोबाइल फोन 1,300 रुपये में खरीदा था. हालांकि उसमें से 700 रुपये देना बाकी था. बाद में भुगतान न होने के कारण शिकायतकर्ता ने मोबाइल वापस कर दिया और आरोपी से अपनी दी हुई राशि वापस ले ली. बताया गया कि इस दौरान शिकायतकर्ता का सिम कार्ड मोबाइल में ही रह गया था. शिकायत के अनुसार शनिवार 13 जून को कविठा स्टॉप क्षेत्र में शिकायतकर्ता ने आरोपी से अपना सिम कार्ड वापस मांगा. इसी बात को लेकर दोनों के बीच विवाद हो गया. आरोप है कि आरोपी ने मौके पर पड़ा पत्थर उठाकर शिकायतकर्ता के सिर पर मार दिया. जिससे उसके सिर से खून निकलने लगा. शिकायत में यह भी कहा गया है कि आरोपी ने गाली-गलौज की और जान से मारने की धमकी दी.

अवैध गोवंश वध और मांस बिक्री का भंडाफोड़

1.05 लाख रुपये का माल जब्त, 190 किलो गोवंश मांस बरामद

संवाददाता/प्रतिदिन अखबार

धारणी, 14 जून - ग्रामीण पुलिस ने अवैध धंधों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत बड़ी कार्रवाई करते हुए धारणी क्षेत्र में अवैध रूप से गोवंशीय पशुओं का वध कर मांस बिक्री करने वाले आरोपियों के खिलाफ छापामार कार्रवाई की.इस दौरान पुलिस ने 190 किलो गोवंशीय पशु का मांस, बिक्री सामग्री, नगदी तथा एक मोटर साइकिल सहित कुल 1 लाख 5 हजार रुपये का माल जब्त किया.

जानकारी के अनुसारपुलिस अधीक्षक निकेतन कदम ने जिले में अवैध धंधों तथा विशेष रूप से गोवंशीय पशुओं के अवैध वध एवं मांस बिक्री करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए थे.

इसी तरह शनिवार 13 जून को धारणी पुलिस स्टेशन के थाना प्रभारी पुलिस निरीक्षक अवतारसिंग चव्हाण को गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि कुरेशी मोहल्ला, धारणी क्षेत्र में कुछ लोग अवैध रूप से गोवंशीय पशुओं का वध कर मांस बेच रहे हैं. सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर शेख समीर शेख कबीर (25, वार्ड क्रमांक 16, कुरेशी मोहल्ला, धारणी) के घर पर छापा मारा. मौके पर शेख नसीम शेख सुलतान (35, कुरेशी मोहल्ला मौजूद मिला. पुलिस ने घर की तलाशी ली. जांच के दौरान घर के बाहर बने खुले स्थान तथा घर के अंदर बड़ी मात्रा में बिक्री के लिए रखा गया गोवंशीय पशु का मांस बरामद हुआ. कार्रवाई में पुलिस ने 190 किलो गोवंशीय पशु का मांस जब्त किया.

कुल मिलाकर 1 लाख 5 हजार रुपये का माल जब्त किया गया. पुलिस द्वारा पूछताछ के दौरान दोनों आरोपी कत्ल किए गए गोवंशीय पशु के स्वामित्व संबंधी कोई दस्तावेज या वैध प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सके. पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया है. यह कार्रवाई पुलिस अधीक्षक निकेतन कदम के मार्गदर्शन में पुलिस निरीक्षक अवतारसिंग चव्हाण, सतीश झाल्टे, सतीश राठोड़, जगत तेलगोटे, आदित्य सुरनार, जीवन गोळंबे, कृष्णा जामुनकर, कविता सोनोने, नितिन लोकपुरे तथा डॉ. अविनाश कांबळे सहित अन्य कर्मचारियों का विशेष योगदान रहा.

बैंक अधिकारी बनकर 1 लाख की उड़ाई रकम

क्रेडिट कार्ड अपडेट के नाम पर महिला से ठगी

प्रतिनिधि/प्रतिदिन अखबार

अमरावती, 14 जून - गाडगेनगर थाना क्षेत्र में साइबर ठगी का एक मामला सामने आया है. जहां एक महिला को बैंक और क्रेडिट कार्ड संबंधी जानकारी के बहाने झांसे में लेकर 1 लाख 11 हजार रुपये की धोखाधड़ी किए जाने की शिकायत दर्ज हुई है. पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है.

जानकारी के अनुसार शिकायतकर्ता रेखा कॉलोनी निवासी महिला हैं. जो ब्यूटी पार्लर का व्यवसाय करती हैं. व्यवसाय से संबंधित लेन-देन के लिए उनका बैंक खाता संचालित है और उनके पास बैंक से जारी क्रेडिट कार्ड भी था. शिकायत के अनुसार शनिवार को दोपहर करीब 3.30 बजे उनके मोबाइल पर एक कॉल आया. कॉल करने वाली महिला ने स्वयं को बैंक के क्रेडिट कार्ड विभाग से जुड़ा बताते हुए कार्ड संबंधी जानकारी दी और बातचीत के दौरान ऑनलाइन प्रक्रिया पूरी कराने की बात कही. कुछ समय बाद शिकायतकर्ता ने अपने डिजिटल भुगतान और बैंक खाते की जानकारी जांची तो उनके खाते से अनधिकृत लेन-देन दिखाई दिए. शिकायत के अनुसार बैंक खाते से 72 हजार रुपये तथा क्रेडिट कार्ड से 49 हजार रुपये निकाले गए. इस प्रकार कुल 1 लाख 11 हजार रुपये की आर्थिक हानि होने की शिकायत पुलिस में दर्ज कराई गई. पुलिस ने शिकायत के आधार पर अज्ञात महिला के खिलाफ संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है.

पृष्ठ 9 के समाचारों का शेष....

हर्षजीत पहुंचे ही नहीं...

कांग्रेस पदाधिकारियों का सिर चकराया - हर्षजीत देशमुख की नई स्वास्थ्य समस्या के कारण कांग्रेस नेता और नगरसेवक निराश नजर आ रहे हैं. स्थानीय कांग्रेस नेता अपनी विश्वसनीयता को लेकर चिंतित हैं. वरिष्ठ नेताओं ने स्थानीय नेताओं से चर्चा कर हर्षजीत देशमुख को विधान परिषद चुनाव के लिए पार्टी का टिकट दिया था. लेकिन चुनाव के ऐन मौके पर उम्मीदवार के इस रुख से कांग्रेस में असमंजस की स्थिति पैदा हो गई और पदाधिकारियों के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया. चार दिन पहले हर्षजीत देशमुख ने प्रचार के लिए आने की बात कही थी, जिससे कुछ उम्मीद जगी थी. लेकिन अब किडनी स्टोन के कारण उनका आना संभव नहीं हो पाया है. वे चुनावी मैदान में बने हुए हैं, लेकिन प्रचार नहीं करेंगे. हर्षजीत देशमुख के इस बयान ने कांग्रेस पदाधिकारियों को और अधिक उलझन में डाल दिया है. परिणामस्वरूप कांग्रेस को अपनी कमजोर होती साख को फिर से स्थापित करने के लिए बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है.

डूबने से दो ममेरे-फुफेरे भाइयों...

तुरंत शोर मचाया. बच्चों की आवाज सुनकर आस-पास मौजूद स्थानीय मछुआरे और गांव को लोग तुरंत मौके पर पहुंचे और दोनों को बाहर निकालने का प्रयास किया. स्थानीय नागरिकों और मछुआरों की मदद से दोनों युवकों को नदी से बाहर निकालकर तुरंत वाहन से कारंजा उपजिला अस्पताल पहुंचाया गया. हालांकि अस्पताल पहुंचने पर डॉक्टरों ने जांच के बाद दोनों को मृत घोषित कर दिया. घटना की जानकारी मिलते ही परिजन और परिचित लोग बड़ी संख्या में अस्पताल पहुंच गए. जहां परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया.

मोर्शी में एक ही रात कई घरों ...

बलोदे के घर से चोर करीब 10 लुगड़े अनुमानित कीमत 4 हजार रुपये लेकर फरार हो गए.

पड़ोसी गांव भोईपुर में भी चोरी - मामले की जानकारी मिलने के बाद आस-पास जांच की गई तो सामने आया कि पड़ोसी गांव भोईपुर में भी चोरों ने वारदात को अंजाम दिया. यहां रामप्रसाद शामा पाटिल के घर में घुसकर लोहे की अलमारी का लॉकर तोड़ दिया गया और वहां से 1.5 ग्राम सोने का डोरला तथा 23 ग्राम चांदी की पायल चोरी कर ली गईं. पुलिस के अनुसार, इन सभी घटनाओं में कुल करीब 60 हजार रुपये का सामान चोरी होने की शिकायत दर्ज की गई है.

गुटखा मुक्त बाजार की ओर ...

जैसे उत्पाद भी वर्तमान स्थिति में बाजारों से लगभग गायब बताए जा रहे हैं. इससे नियमित उपभोक्ताओं को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है. जैसे कि मानो उनके मुंह में छाले आने लगे. शहर के कई नागरिकों ने प्रशासन की कार्रवाई का स्वागत किया है और मांग की है कि अवैध गुटखा बिक्री पर स्थायी रोक लगाने के लिए इसी प्रकार का अभियान आगे भी जारी रखा जाए.

47 केंद्रों पर शांतिपूर्ण ढंग से ...

विद्यालय, बियाणी विद्यालय, आईटीआई, शासकीय पॉलिटेक्निक सहित शहर के 47 केंद्रों पर परीक्षा आयोजित की गई. संभावित यातायात बाधा, बारिश अथवा अन्य आकस्मिक परिस्थितियों को देखते हुए पुलिस एवं प्रशासन ने विशेष व्यवस्था की थी. परीक्षा के दौरान कहीं से भी किसी प्रकार की गड़बड़ी या अनुचित घटना की सूचना नहीं मिली. प्रशासन, पुलिस विभाग तथा परीक्षा अधिकारियों के समन्वय से पूरी परीक्षा शांतिपूर्ण एवं व्यवस्थित तरीके से संपन्न हुई.